DATE 23.12.24
PAGE No. 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD

कक्षा - आठवीं   शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-16 'मित्रता') लेखक - आचार्य रामचंद्र शुक्ल

पुस्तक - नवतरंग - 8

(भाग - 1)

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा आठवीं की पुस्तक नवतरंग-8 के पृष्ठ -132 में दिए पाठ-16 'मित्रता' का अध्ययन करेंगे।

सब बच्चे अपनी - अपनी पुस्तक और अभ्यास-पुस्तिका खोलकर बैठेंगे। जो लिखित कार्य कराया जाए, उसे अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखते जाएँगे।

बच्चो! पाठ आरंभ करने से पहले कुछ जानकारी हम प्राप्त कर लेते हैं। पाठ 'मित्रता' आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित एक प्रसिद्ध निबंध है। इसमें शुक्लजी ने मित्रता से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण बातों को बताया गया है। साथ ही यह भी बताया गया है कि मित्र चुनते समय हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। मित्रता एक औषधि के समान हो सकती है तथा मित्रता एक ज्वर के समान भी हो सकती है। कहा भी गया है कि अच्छी संगति से व्यक्ति के गुणों का विकास होता है तथा बुरी संगति से व्यक्ति का सर्वनाश हो जाता है। अतः आवश्यक है कि मित्र का चुनाव बहुत सोच-समझकर करना चाहिए।

बच्चो! अब मैं आपको पाठ पढ़ाना आरंभ करती हूँ -

जब कोई युवक अपनी किशोरावस्था में घर से बाहर जाता है तो उसे मित्र चुनने में कठिनाई होती है। यदि उसका व्यवहार मेल-मिलाप वाला होता है तो बहुत कम समय में उसके कई मित्र बन जाते हैं। मित्रों का चुनाव यदि अच्छा हुआ तो जीवन सफल हो जाता है क्योंकि अच्छे मित्रों की संगति ही इंसान को अच्छा या बुरा बना सकती है।

हम लोग ऐसे समाज में रहते है कि जब हम कोई

Scanned with CamScanner

DATE 23.12.24
PAGE No. 2

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-16 मित्रता)

काम शुरू करते हैं तो धीरे-धीरे करते हुए उस कार्य में हम कुछ समय के पश्चात् पूरी तरह से निपुण हो जाते हैं। शुरू-शुरू में थोड़ी कठिनाई आती है। हमारा मन अत्यंत कोमल होता है। हम सही-गलत का चुनाव नहीं कर पाते हैं। हम कच्ची मिट्टी के समान या कोरे कागज़ के समान होते हैं। कच्ची मिट्टी से हम घड़ा, मूर्ति जो चाहे उससे कोई भी रूप दे सकते हैं। चाहे उस मिट्टी से राक्षस बनाएँ चाहे देवता। उसी तरह कोरे कागज़ पर हम जो लिखना चाहें लिख सकते हैं। छोटे बच्चों का हृदय बहुत कोमल होता है और उनका मन हर प्रकार के संस्कार ग्रहण करने में सक्षम होता है। हमें ऐसे लोगों से मित्रता नहीं करनी चाहिए जो हम से अधिक दृढ़ संकल्प वाले हों क्योंकि हम ऐसे लोगों की बातों का विरोध नहीं कर पाते। उनकी हर बात हमें माननी पड़ती है जो हमारी बात को हमेशा ऊपर रखते हैं ऐसे लोगों का साथ भी ठीक नहीं होता क्योंकि ऐसी स्थिति में हमारे ऊपर कोई दबाव नहीं रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है।

बच्चो! जितना पाठ पढ़ा है उसमें आए कठिन शब्दों के अर्थ देख लेते हैं। ये शब्दार्थ इस प्रकार हैं—

शब्दार्थ:-

हेल-मेल - मिलना-जुलना
चित्त - हृदय
दृढ़ संकल्प - पक्का इरादा
आचरण - व्यवहार, चरित्र
ढब - ढंग
सुगम - सरल
पुष्ट - बलिष्ठ, बलवान
हतोत्साह - उत्साहरहित, निराश
परिणित - बदल जाना
परख - जाँच
विवेक - बुद्धि
अनुसंधान - खोज, अन्वेषण
मैत्री - मित्रता
त्रुटियों - गलतियों
सचेत - सावधान
निपुणता - कुशलता

बच्चो! अब हम पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ते हैं—

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

23.12.24

DATE
PAGE No 3

कक्षा- आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-16 'मित्रता')

युवा वर्ग मित्र बनाने से पहले मित्रों के आचरण और प्रकृति का ध्यान नहीं रखते और बाहरी दिखावे पर ही मुग्ध हो जाते हैं। कैसे आश्चर्य की बात है कि लोग एक घोड़ा लेते हैं तो उसके गुण-दोष को परख कर लेते हैं, पर किसी को मित्र बनाने में उसके पूर्व आचरण और प्रकृति आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करते। बस, उसका हँसमुख चेहरा, साहस, चतुराई तथा बातचीत का ढंग देखकर लोग मित्रता कर लेते हैं। किसी प्राचीन विद्वान का कथन है — "विश्वासपात्र मित्र जीवन की औषधि है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाए उसे समझना चाहिए कि खज़ाना मिल गया।" सच्ची मित्रता जीवन निर्वाह अर्थात् उत्तम जीवन जीने में सहायक सिद्ध होती है। सच्चा मित्र वैद्य की दवा के समान है। अच्छा मित्र धैर्यवान होता है। जब हम गलत रास्ते की ओर अग्रसर होते हैं तो वह हमें अच्छी माँ के समान धैर्य और कोमल स्वभाव से हमें समझाता है और रोकता भी है। यदि हम निराश होंगे तो वह हमें उत्साहित करेगा।

सच्ची मित्रता में उत्तम से उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख, अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है। प्रत्येक युवा पुरुष को ऐसी मित्रता करने का प्रयास करना चाहिए। बच्चो! कुछ प्रश्न लिखकर उनके उत्तर मैं आपको लिखकर दे रही हूँ। सब बच्चे इन्हें लिखेंगे व याद करेंगे।

प्रश्न 1. किन चार बातों को देखकर लोग किसी को भी अपना मित्र बना लेते हैं?

उत्तर- हँसमुख चेहरा, बातचीत करने का ढब या तरीका, थोड़ी चतुराई और साहस - ये ही चार बातें किसी में देखकर लोग झटपट उसे अपना मित्र बना लेते हैं।

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner

DATE 23.12.24
PAGE No 4

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ - 16 'मित्रता')

प्रश्न - 2 — मित्र बनाते समय लोग क्या नहीं सोचते ?
उत्तर - मित्र बनाते समय लोग यह नहीं सोचते कि मैत्री का उद्देश्य क्या है? जीवन के सामाजिक व्यवहार में उसका कुछ मूल्य है भी या नहीं।

प्रश्न - 3 हमें अपने मित्र से क्या आशा रखनी चाहिए ?
उत्तर - हमें अपने मित्र से यह आशा रखनी चाहिए कि वह उत्तम संकल्पों में हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे। जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे तब वे हमें सचेत करेंगे और जब हम निराश होंगे तब वे हमें उत्साहित करेंगे।

बच्चो! आज हम इस पाठ को यहीं समाप्त करते हैं। पाठ के शेष भाग को हम अगले सप्ताह पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ।

गृहकार्य :-

सभी छात्र इस पढ़ाए गए पाठ को पुनः पढ़ेंगे। साथ ही कराए गए शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे व याद करेंगे। लेख का विशेष ध्यान रखें।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ - 4)

Scanned with CamScanner